ISSN 2349-638X

REVIEWED INTERNATIONAL JOURNAL

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

MONTHLY PUBLISH JOURNAL

VOL-II ISSUE-X OCT. 2015

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- editor@aiirjournal.com
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

युगपुरूष छत्रपति शिवाजी

डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील
हिंदी विभाग,
श्री शिव-शाहू महाविद्यालय,सरूड

भारत की भूमि पर जन्मे वीरों की शौर्य गाथायें राष्ट्रवासियों के गौरव की सूचक हैं। छत्रपति शिवाजी स्वराज्य के संस्थापक थे। युगों तक भारत भूमि इनके बलिदान की ऋणी रहेगी।

छत्रपति शिवाजी का जन्म सन् १६३० ई. में पूना के निकट शिवनेरी दुर्ग में हुआ था। छत्रपति शिवाजी के चारित्रिक निर्माण में उनकी माता जीजाबाई का विशेष योगदान था। अपनी माँ से उन्होंने स्त्रियों और सब धर्मों का सम्मान करना सीखा। उस समय भारत पर मुगलों का राज था। छत्रपति शिवाजी मुगलों द्वारा भारतवासियों पर किये जा रहे अत्याचार एवं भेद्भाव को देखकर बहुत दुखी थे। वह मुगलों की अत्याचारी प्रवृत्ति को जड से उखाड़ फेकना चाहते थे इसी उद्देश्य से उन्होंने एक सेना का गठन किया।

छत्रपति शिवाजी बचपन से ही मलयुद्ध, भाले बरछे, तीर तलवार, धुड़सवारी तथा बाण विद्या में प्रवीण थे। पिता शहाजी द्वारा भेजे गए अध्यापक गुरू ओ ने उन्हे युद्ध कौशल और शासन प्रबन्ध में निपुण कर दिया था। अपनी निर्मित सेना से उन्होंने उन्नीस वर्ष की आयु में ही तोरण, सिंहगढ़ आदि किलों पर अधिकार जमा लिया।

अपनी शक्ति बढ़ा लेने के बाद शिवाजी ने बीजापुर पर आक'मण कर दिया। बीजापुर के शासक ने अपने शक्तिशाली सेनापति अफजल खाँ को छल से शिवाजी को मारने का आदेश दिया। किन्तु शिवाजी उनकी चाल में नहीं फंसे और उन्होंने अफजल को ही मार डाला। मुगल सम्राट औरंगजेब भी शिवाजी से परेशान था। उसने शिवाजी की शक्ति को कुचलने के लिये उन्हें धोखे से आगरा में कैद करा लिया। अगर शिवाजी चतुराई से कारागार से भाग निकले।

शिवाजी न केवल एक साहसी और वीर योद्धा थे अपितु एक महान इंसान भी थे। वह युद्ध में बंदी बनायी गयी दुश्मनों की महिलाओं और बच्चों का पूर्ण सम्मान करते व उन्हें सकुशल वापस भेजने का प्रबन्ध करते थे। वे चतुर और कुशाग' बुद्धि के थे। विदेशियों को देश से बाहर निकालने का उनका प्रयास भारतवासी कभी नहीं भुला सकेंगे। देश को आज भी ऐसे वीर और कुशल मार्गदर्शक की जरुरत है। भारत वर्ष का इतिहास अनगिनत वीरों और देशभक्तों से भरा पड़ा है। ऐसे ही वीरों में से एक वीर छत्रपति शिवाजी थे। उनकी वीरता पराक'म एवं शौर्य अद्वितीय था। शिवाजी राज्य प्रबंधन में विशेष योग्यता रखते थे। उनके शौर्य और साहस ने लाखों युवाओं को देशभक्ति के लिए प्रेरित किया।

औरंगजेब के क्रुर शासन के खिलाफ शिवाजी ने शक्तिशाली स्वराज्य को तो खड़ा किया ही साथ ही वे बुंदेलखंड के यशस्वी राजकुमार छत्रसाल के भी सहायक हुए । छत्रसाल बुंदेला के नाम से वियात इस नायक को मुगलिया सल्तनत के खिलाफ खड़ा करके उन्होंने औरंगजेब के साम्राज्य की जड़ें हिला दी। शिवाजी की राजनीतिक सूझ-बूझ तथा सुरक्षा की समझ बड़ी पैनी थी।अन्य शासकों के विपरीत शिवाजी की सुरक्षा की समझ और जागरुकता का परिचय इस बात से मिलता है की उन्होंने नौसेना की नींव रखी सिंधु दुर्ग का निर्माण भी करवाया शिवाजी में राज्य-प्रबन्ध की विलक्षण शक्ति थी। हिंदी के प्रसिद्ध कवि भूषण उनके दरबारी कवि थे। उन्होंने शिवाजी की प्रशंसा ''शिवा बावनी'' ग्रथ की रचना की। हमें शिवाजी से शौर्य, सच्चरित्रता और जाती-उन्नति की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। वास्तव में इस समय भारत को शिवाजी जैसे वीरों की ही आवश्यकता है।

शिवाजी केवल मराठा राष्ट्र के निर्माता ही नही थे, अपितु मध्ययुग के सर्वश्रेष्ठ मौलिक प्रतिभासम्पन्न व्यक्ती थे। महाराष्ट्र की विभिन्न जातियों के संधर्ष को समाप्त कर उनको एक सूत्र में बाँधने का श्रेय शिवाजी को ही है। इतिहास में शिवाजी का स्वराज्य रक्षक के रूप में सदैव सभी के मानस पटल पर विद्यमान रहेगा।

शिवाजी की अभिनव सैन्य रणनीति विशेषरूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने गुरिल्ला युद्ध के तरीकों का अविष्कार किया, जिन्हें गनिमी कावा करते हैं। यह भूगोल, गति और भौंचका कर देने वाले सामरिक कारकों के अनुसार भारी रिस्क लेकर युद्ध में परिस्थिति का फायदा उठाने की रणनीति है। इसमें बड़े और अधिक शक्तिशाली दुश्मनों को हराने के लिए सटीक हमलों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसमें सर्जिकल स्ट्राइक जितनी ही भारी रिस्क है।

शिवाजी ने मजबूत विस्तृत स्वराज स्थापित करने के लिए सबसे पहले दुर्गों पर कब्जा करने की नीति अपनाई। दुर्ग नियंत्रण के लिए मौंके की नजाकत के अनुसार साम-दाम-दण्ड-भेद हर तरह के चातुर्य का उपयोग किया।

संदर्भ सूची

१) केशव प्रसाद गुरू मिश्रा- वीर शिवाजी
२) रष्मि पाठक- दिल्ली सल्तनत का इतिहास
३) अमित कुमार- मराठों का इतिहास
४) डॉ. हरफूलसिंह - मध्यकालीन समाज, धर्म, कला एवं वास्तुकला
५) डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी- समीक्षा के विविध रंग

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com